अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जुलाई-2021

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–तीसरा | जुलाई–2021

2 दाता जी कित्थे गयों
(एक शब्द)

मालिक का भाणा मानें 3
(सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)

13 गुरु का शुक्राना
(परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश)

शाकाहारी आहार 15
(बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक संदेश)

19 सवाल–जवाब
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **परमजीत सिंह व डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 232 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

दाता जी कित्थे गयों

दाता जी, कित्थे गयों, प्रीतमा वे, कित्थे गयों X 2

हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे ला के X 2
नहीं सी छड जांणा सानूं, मालिया वे,
कित्थे गयों...

पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दु:खड़े उठांदे X 2
जे चिर लौणां सी, रखवालिया वे,
कित्थे गयों...

हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने लावे होर हुण केहड़ा X 2
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
कित्थे गयों...

सुण फरियाद 'अजायब' दी आवीं, आ के दु:खियां दा दर्द मिटावीं X 2
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
कित्थे गयों...

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

06 दिसम्बर 1989

मालिक का भाणा मानें

गुरु अमरदेव जी की बानी

दिल्ली

यह दुनिया मौत और पैदाइश का देश है, यहाँ कोई सदा स्थिर नहीं रहा। मरने और जीने में बहुत फर्क होता है लेकिन ऐसे लोग भाग्यशाली होते हैं जो नाम के साथ जुड़ जाते हैं जिन्होंने जीते जी वह मसला हल कर लिया जहाँ मरकर जाना है। ऐसे लोग भी होते हैं जिनकी जीते जी पत नहीं और मरने के बाद भी पत नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मूर्ख मरे ते मरन विगाड़े।

हम मरना भी बिगाड़कर चले जाते हैं। मरना क्यों बिगड़ता है? क्योंकि मरकर फिर पैदाईश होती है और फिर मौत हो जाती है लेकिन गुरमुख इस जीवन से फायदा उठाते हैं। गुरमुख इस जन्म में भजन–सिमरन करते हैं, गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलते हैं दरगाह में उनकी मान–इज्जत होती हैं:

गुरमुख जन्म सँवार दरगह चलया।

जब गुरु अमरदेव जी चोला छोड़ने लगे उस समय उन्होंने अपने परिवार के लोगों को अपने पास बिठा लिया और उनसे कहा, ''देखो भई! गुरमुखों का काम रोना नहीं होता। मेरे परिवार में से मेरे जाने के बाद जो मुझे रोएगा वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।'' गुरमुख, साधु–सन्त या महापुरुष वही है जो **मालिक का भाणा मानें**। सुंदर आपका पड़पोता था जिसने यह सारी कथा गुरु अर्जुनदेव जी को सुनाई।

गुरु अर्जुनदेव जी भल्लों के मुँह से ही सुनना चाहते थे कि गुरु अमरदेव जी नामदान का हुक्म रामदास सोढ़ी को दे गए हैं, रामदास जी को मुकर्र कर गए हैं। वहाँ सारे भल्ले बैठे थे, भल्लों के मुँह से ही सुनना अच्छा लगता था लेकिन अक्षरों की योजना कविता के रूप में गुरु

अर्जुनदेव जी ने ही बनाई है। इस बानी का नाम सद है, सद का मतलब होता है आखिरी सद्दा।

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ।।
गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ।।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिसने सारे जगत को जीवन दिया है वह अपने भक्तों की रक्षा करता है ऐसा नहीं कि उसने एक बार रक्षा कर दी फिर रक्षा नहीं करता; वह युगों–युगों से जीवों की रक्षा करता आया है। वह उन गुरुमुखों की, भक्तों की पत रखता है जो गुरु के 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं।''

अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे।।
परसादि नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे।।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''गुरमुख जब तक देह में बैठे हैं वे 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं, वे अपने आप मियाँ–मिट्ठू नहीं बनते अपनी बड़ाई नहीं करते। उन्हें पता है अगर हमारे अंदर कोई अच्छाई है तो वह अच्छाई करने वाला हमारा गुरु है, उसका श्रेय गुरु को ही जाता है। जो 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं वे बड़ो की रहमत पाते हैं, गुरु नानकदेव जी और गुरु अंगददेव जी महाराज उनकी जरूर रक्षा करेंगे; वे जब संसार से जाएंगे तो उन्हें परमपद का ईनाम मिलेगा।''

आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ।।

भाई बुड्ढा, भाई गुरदास और जो मुखिया सेवादार थे उन्होंने गुरु अमरदेव जी से कहा, ''महाराज जी! आप कुछ समय और रह जाएं।'' अमरदेव जी महाराज ने कहा, ''मुझे धुरदरगाह सच्चखंड से सद्दा(बुलावा) आ गया है, मैंने जाना है। जब किसी के सज्जन का आगे आदर–मान हो तो आप लोगों को खुश होना चाहिए।'' सेवकों ने कहा, ''महाराज जी!

आप आदर–मान कह रहे हैं लेकिन आप तो शरीर छोड़ रहे हैं।'' गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''मुझे गुरु सच्चखंड में प्रशाद दे रहा है, मुझे बहुत अच्छी जगह दे रहा है, अब मेरा जाना ही ठीक है।''

जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ।।
हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ।।

आप कहते हैं, ''वह ठाकुर, प्रभु अतुल्य है उसे तोला नहीं जा सकता, वह अटल है, सदा कायम है। मुझे उस शक्ति परमात्मा का बुलावा आ गया है अब मेरे लिए जाना ही ठीक है। यह मौका बातचीत करने का नहीं भजन–सिमरन करने का है, आप लोग भजन–सिमरन करें।

सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ।।

कुलमालिक होते हुए भी सन्तों में नम्रता होती है। गुरु अमरदेव जी अपने सतगुरु अंगददेव जी के आगे विनती करते हैं, ''आप मेरी पैज रखें।'' अंदर जाएं तो पता लगता है कि यह संसार डींग मारने का नहीं है।

कोई महात्मा चोला छोड़ने लगा, उस समय उसके लड़के ने पूछा, ''कोई तकलीफ है तो बताएं?'' उस महात्मा ने कहा, ''चुप रह, रास्ता बहुत टेढ़ा है, काल बिल्कुल तैयार खड़ा है। काल नहीं चाहता कि कोई बिना दाग चला जाए, बस! एक साँस बचा है तू मेरी लिव को मत उखाड़।'' महात्मा को पता है कि काल क्या शक्ति है? यह जाते हुए की भी पूँजी लूट लेता है इसलिए आप कहते हैं सतगुरु! आपके आगे मेरी बिनती है कि आप मेरी लाज रखें, मेरा नाम आपका चेला पड़ गया है।

पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो।।

आप कहते हैं, ''आप मेरे अंदर नाम प्रकट कर दें इसी में मेरी पैज है कि मेरी सुरत नाम में ही लगी रहे।''

अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो।।

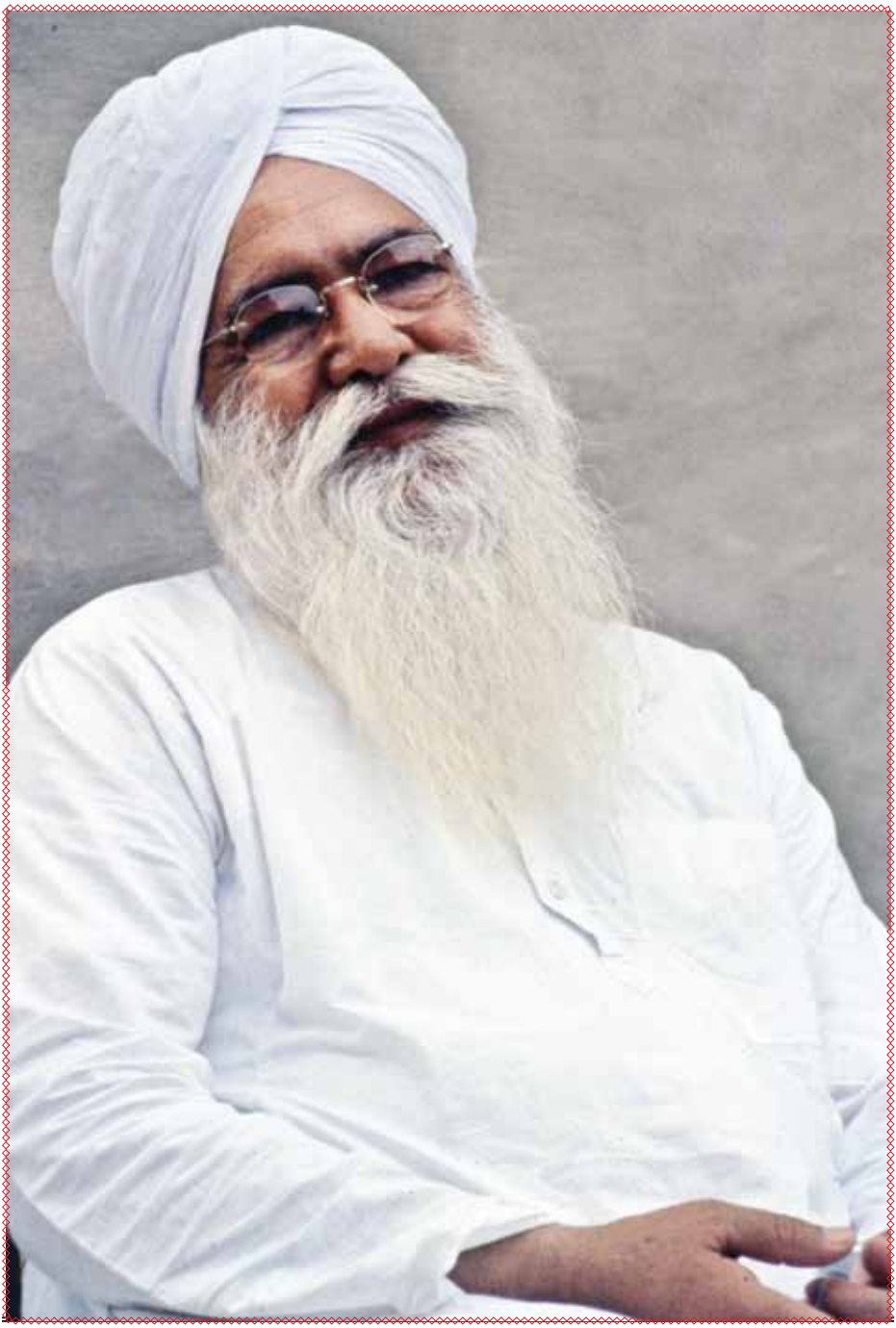

आपने मुझे जो नाम दिया है वह नाम यमदूतों से छुड़वाने वाला है इसलिए मेरी सुरति उस नाम के साथ ही जुड़ी रहे।

सतिगुरु की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ।।

गुरुमुखों की अरदास प्रभु से मिलने के लिए होती है, प्रभु उनकी अरदास सुन लेता है। जब अरदास की तो प्रभु ने वह अरदास सुन ली गुरु दूर नहीं था क्योंकि नजदीक से नजदीक 'शब्द–रूप' गुरु ही होता है।

हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहे साबासि जीउ।।

गुरु ने बहुत भारी दया की अपने साथ मिला लिया। सन्तों की जो आत्माएं पहले वहाँ पहुँची हुई थी वे सब धन्य–धन्य करने लगी कि आप धन्य है जो मातलोक के पदार्थों को लात मारकर यहाँ आ गए हैं।

मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ।।

गुरु अमरदेव जी महाराज के चार भाई, दो लड़के मोहन और मोहरी थे। गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''आप सब मेरे पास आकर बैठ जाएं और मेरी शिक्षा सुनें।''

हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ।।

गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''उसको भा गया है उसने मुझे लेकर जाना है। अब मुझे अंदर शाबाश मिल रही है, अंदर बहुत प्यार मिल रहा है।''

भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।।

प्यारे बच्चो! वही भक्त है, वही सतपुरुष है और वही सन्त है जो **मालिक का भाणा मानें**।

आन्नद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ।।

आप कहते हैं, ''शब्द शुरु हो गया है, परमात्मा ने सिंहासन से उठकर मुझे गले लगाया है।'' आप कहेंगे कि ऐसा गुरुओं के साथ ही होता है, ऐसा

सेवको के साथ भी होता है। सवाल यह है कि हम अपने अंदर झाँककर देखें कि हम जाने के लिए कितने तैयार होते हैं? अगर हम जाने के लिए तैयार हों तो सब कुछ ही बताकर जाऐंगे लेकिन हम तैयार नहीं होते। हम तो कहते हैं कि यह क्या हुआ? सोचकर देखें! यह कोई नई बात नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं हो सकता है हमें कोई रोने वाला ही न हो।

धंधा पुच्छो भाईओ तुम कूड़ कमावो, ओह न सुणही कतही तुम लोक सुणावो

हम उसके लिए नहीं अपने धंधों के लिए रोते हैं। औरत रोते हुए कहती है, ''हाय! हाय! तू मुझे किसके आसरे छोड़ गया है?'' लड़के रोते हुए कहते हैं, ''तेरे बिना हमें कौन पालेगा?'' लड़कियाँ कहती हैं, ''तू हमारे सिर पर हाथ रखता था अब कौन रखेगा?''

रानी साँगली का लड़का गुजर गया, उसने अपनी छाती पीटी। लड़के ने स्वपन में दर्शन देकर कहा, ''देख मम्मी! तूने जो छाती पर चोटें मारी मेरे मुँह पर दाग पड़ गए हैं।'' महाराज सावन सिंह जी ने रानी से कहा, ''बेटी! जितनी देर तेरा हक था उसने तेरा देना था वह तेरा हक पूरा कर गया, हो सकता है अगले घर में उसकी तुझसे भी ज्यादा जरूरत हो।''

तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ।।

आप मेरे चारों भाई, बेटे और सारा परिवार बैठा है आप अपने दिल में निर्णय करके देख लें क्या कोई सदा यहाँ रहा है?

धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ।।

गुरु अमरदेव जी सबको धीरज देकर कह रहे हैं कि परमात्मा का हुक्म आ गया है, अब मैं परमात्मा के पास जा रहा हूँ।

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ।।
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ।।

आप सारे परिवार से कहते हैं कि प्यारेयो! जो रोएगा वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा। आप हिन्दुओं के गरूड़ पुराण को सुनते ही रहते हैं जब कोई मर जाता है तो गरूड़ पुराण पढ़ते हैं लेकिन ग्रंथ जो कहता है उसे मानते नहीं। उसमें लिखा है कि जब आप रोते हैं मरने वाले को रास्ते में नाक की मैल मिलती है। यम उसे मारते हैं कि तू इनका क्या लेकर आया है?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिसके साथ आपकी दुश्मनी है जब वह मर जाए तो उसे खूब रोएं क्योंकि दुश्मन तो दुश्मनी निकालता है। अगर आपका मित्र, सज्जन मर जाता है तो आप भजन करें ताकि उसकी आत्मा को फायदा हो।

मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए।।
तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए।।

गुरु अमरदेव जी कह रहे हैं कि आगे जिसका मित्र आदर–मान करे, पोशाक दे कि तू सच्चखंड के सिंहासन पर बैठ, मुझे मेरे गुरु अंगददेव जी पोशाक पहना रहे हैं। परिवार के लोग रो रहे हैं कि आप जा रहे हैं लेकिन अमरदेव जी कहते हैं कि मुझे मेरे गुरुदेव बख्श रहे हैं, पोशाक दे रहे हैं।

सतिगुरु परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ।।
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ।।

बाबा बुड्ढा मुखिया था उसने आपसे पूछा, ''आपके बाद कौन काम करेगा? ताकि झगड़ा न हो।'' वहाँ रामदास जी खड़े थे, अमरदेव जी ने कहा, ''सब इसके पैरों में गिर जाओ, गद्दी किसी के घर की नहीं होती।'' अमरदेव जी भल्ले थे और रामदास जी सोढ़ी थे। रामदास जी गुरु अमरदेव जी के दामाद लगते थे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु की अमानत क्यों रखिए दित्ते ही सुख होय

सन्तों के पास अमानत होती है जिसने पहले दिया होता है उसी ने लेना होता है, सन्तों को तभी शान्ति आती है जब वे गुरु की दी हुई वस्तु को सौंप देते हैं। अमरदेव जी के इतना कहने की देर थी कि आपके लड़के नाराज होकर घर चले गए कि रामदास तो हमारे घर का नौकर है।

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ।।
केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ।।

केशव नाम परमात्मा का है, पंडित भी परमात्मा को कहते हैं लेकिन हम ऐसे मिलते–जुलते नाम रख लेते हैं। निर्वाण जिसकी कोई हद न हो हम सबने शब्द को सुनना है, हरि कथा करनी है:

गोबिंद गोबिंद कहया दिन राति गुण गोबिंद शब्द सुणामणया।

गोबिंद–गोबिंद कहने से गोबिंद नहीं मिलता, 'शब्द–नाम' को सुनना है। ये हरि कथा है लेकिन हम अपने मतलब के लिए बाहर ढाल लेते हैं।

हरि कथा पड़ीअै हरि नामु सुणीअै बेबाणु हरि रंगु गुर भावए।।
पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए।।

दीपक जलाना, फूल चुगना गुरमत में कोई महानता नहीं रखते।

दीवा मेरा ईक नाम दुःख विच पाया तेल
की चानण हुण हों पया छूटया जिन सो मेल

बाबा जयमल सिंह जी और सावन सिंह जी ने कहा है कि जब सतसंगी को नामदान मिल जाता है तब उसका सारा ही क्रिया–कर्म हो जाता है, वह सच्चखंड का हकदार हो जाता है। सभी सन्तों ने अंदर जाने के लिए कहा है। किसी ने इसे हरि–सरि, किसी ने इसे प्रयागराज और किसी ने इसे अमृतसर कहा है।

हरि भाइिआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ।।

आप कहते हैं, ''परमात्मा को भा गया अच्छा हुआ कि मुझे बहुत सज्जन, सुंदर, सुलझा हुआ बेटा रामदास मिल गया।'' मैं बताया करता हूँ कि शिष्य को गुरु भाग्य से मिलता है और गुरु को भी शिष्य भाग्य से ही मिलता है। शिष्य बनना आसान नहीं।

रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ।।

गुरु अमरदेव जी ने दुनियावी तौर पर रामदास सोढ़ी को तिलक लगा दिया और उसके अंदर शब्द प्रकट कर दिया।

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ।।

गुरु अमरदेव जी ने जो बोला उसे सिक्खों ने मान लिया, वे रामदास के पैरों में गिर गए लेकिन आपके दोनों लड़के वहाँ से चले गए।

मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ।।

मोहरी के दिल में ख्याल आया कि चलो कुछ माँग लेते हैं। गुरु साहब ने मोहरी से पूछा, ''तू हाथ जोड़कर खड़ा है तुझे क्या चाहिए?'' मोहरी ने कहा, ''सिक्खी दान दें।'' गुरुसाहब ने उसे पकड़कर रामदास जी के चरणों में गिरा दिया और कहा, ''अब जो चाहिए इससे ही मिलेगा।''

सभ पवै पैरी सतिगुरु केरी जिथै गुरु आपु रखिआ।।

गुरु अमरदेव जी ने रामदास जी के अंदर अपना आप रख दिया सारे रामदास जी के पैरों में झुकने लगे।

कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरु आणि निवाइआ।।

अमरदेव जी का बड़ा लड़का मोहन कलप्ता रहा कि यह हमारे घर का नौकर था आज हमारे घर का मालिक बन गया है। गुरु साहब ने मोहन से कहा, ''तू कलप्ता ही रहेगा लेकिन तुझे शान्ति तब आएगी जब रामदास के वंश में से कोई गुरु बनेगा और तू उसके पैरों में गिरेगा।'' जब गुरु

अर्जुनदेव जी इनके घर से पोथियां लेने गए तब आपके परिवार ने विनती की कि आप कभी आए नहीं आपने हमारा हालचाल नहीं पूछा, इनकी छाती में चौबिस घंटे तकलीफ रहती है। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपनी दया दृष्टि की तब जाकर मोहन ठीक हुआ। जो निन्दा करता है उसे अंदर से ही सतगुरु प्रेरित करता है खींच लेता है।

हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ।।

परमात्मा भाणा मानने वाले को बड़ाई देता है, उन्हें सच्चखंड में जगह देता है। जो लोग रोते है परमात्मा को गालियाँ निकालते हैं उन्हें वह अपने पास जगह कहाँ से देगा?

कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ।।

भाई सुंदर ने कहा, ''देखें! गुरु की कितनी दया हुई, गुरु ने जिसके अंदर अपना आप रख दिया सारा जगत ही उनके पैरों में गिरने लगा।'' हम लोग जिंदगी में मौत–पैदाईश देखते ही रहते हैं, हमें ज्यादा रोने–धोने से ऊपर उठना चाहिए और ऐसे मौके पर ज्यादा नाम जपना चाहिए। अगर आपका साथी जा रहा है तो आप उसे खुशी–खुशी भेजें। आपको पता तो है कि उसने जाना है तो आप उससे कहें कि तेरा हमारा साहब–सलाम है। अब तू अपने गुरु का ध्यान कर और किसी काम की तरफ ध्यान न दे।

मैंने कई सतसंगन बीबीयां देखी हैं अगर घरवाले ने थोड़ी बहुत झलक दिखाई तो वह कहती हैं, ''मेरा राखा गुरु है, तू गुरु के लड़ लगकर अपना सफर कर। हमें नाम मिला है, गुरु मिला है हम भाणा मानें।''

भाणें ते सुख उपजया सन्तों राम नाम लिव लाई

आप कहते हैं, ''भाणा मानने से ही सुख मिलता है वही गुरुमुख है वही भगत है, वही सन्त है जो **मालिक का भाणा मानता है।**''

***

जुलाई 1968

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

गुरु का शुक्राना

मैं आप सबको हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की पावन जन्म जयंती पर अपना प्यार और शुभकामनाएं देता हूँ। आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको मानव तन मिला है जो सारी कायनात में सबसे ऊँचा है। मैं आशा करता हूँ कि आप सब जीने योग्य जीवन जिएंगे।

हुजूर सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इस बारे में बातें करने से या लिखने से कोई फायदा नहीं क्योंकि बिना अमल में लाए सभी शब्द व्यर्थ हैं। हमें इन शब्दों के सच्चे अर्थों का जीवन जीना सीखना चाहिए। हम क्या हैं और कैसे जी रहे हैं? अभी तक हमने जो शब्द पढ़े और विचारे हैं उन शब्दों को हमें अपने वजूद का अहम हिस्सा बनाना चाहिए।'' हुजूर ने हमें जो हुक्म दिया है हमें दिन-प्रतिदिन उस हुक्म का पालन करना चाहिए।

हमने जो जीवन जिया है वही हमारे साथ जाता है, अनपढ़ व्यक्ति मरने के बाद पढ़ा-लिखा नहीं बन सकता। हमें लगातार सतर्क रहना चाहिए ताकि जब रास्ते में बाधाएं आएं तो आप ठोकर खाकर गिर न जाएं अगर आप गिर भी जाएं तो अपने संतुलन को न खोएं। अपने आपको

संभालें, आपके सिर पर जो गुरु काम कर रहा है उसमें पूरे विश्वास के साथ अपने रास्ते पर बढ़ते चले जाएं।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर कोई चलते हुए गिर जाता है तो उसे उठना चाहिए, हिम्मत करके अपने सफर को तय करना चाहिए।'' आप फैसला कर लें कि आपने मन का हुक्म मानना है या गुरु का हुक्म मानना है? यह चुनाव आपके हाथ में है, आप चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं। जो गुरु के रास्ते पर चलते हैं हो सकता है संसार उनकी निन्दा करे लेकिन आपको फिक्र करने की जरूरत नहीं क्योंकि आपने सही रास्ता अपनाया है।

गुरु शब्द स्वरूप देह है, वह ज्योति, जीवन और प्रेम है अगर आप उसमें जीएंगे तो आपका जीवन बन जाएगा। 'शब्द' जीवन की रोटी और पानी है। आप अंतरी स्थिरता में दाखिल हों और इन्हें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करें ये आपको अनंत जीवन देंगे, ये आपके अंदर हैं।

भूतकाल को भूल जाएं, भविष्य को भूल जाएं पूरी तरह आराम से रहें; स्थिर हो जाएं। अकेले हो जाएं और अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु के हवाले कर दें। आपके जरिए प्रकाश व प्रेम पैदा होगा जो पूरे संसार में फैलेगा।

अपने गुरु परमात्मा का हर वक्त शुक्राना करें जिसने आपको इस मार्ग पर डाला है। आप उसकी दी हुई बख्शिशों का आनन्द उठा रहे हैं। **गुरु का शुक्राना** करने से आपको हमेशा गुरु का अहसास होगा। गुरु के बिना आप कुछ नहीं कर सकते। आप जितना ज्यादा समय गुरु के साथ बिताएंगे उतनी ही आपकी रोजमर्रा की जिंदगी सरल बन जाएगी।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर शिष्य समुंद्र के इस पार रहता है और गुरु दूसरे पार रहता है, आप अपनी सुरत को उसकी ओर लगाएं, आपको पूरी दया मिलेगी क्योंकि गुरु शब्द स्वरूप देह है, वह हर जगह है।'' जब हमें नामदान मिलता है गुरु पावर हमारे अंदर बस जाती है और हमें संसार के अंत तक नहीं छोड़ती। ***

बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक संदेश....

शाकाहारी आहार

हमारी आत्मा पाँच तत्वों, पच्चीस प्रकृतियों, तीन गुणों, मन और माया से ढकी हुई है। जब तक हम अपनी आत्मा को इनसे मुक्त न कर लें तब तक हम परमात्मा और उसकी सृष्टि के बारे में नहीं समझ सकते। जब तक हम अपनी आत्मा को इन आवरणों से मुक्त नहीं कर लेते और इसे मन के दायरे से ऊपर नहीं ले जाते तब तक हमारे अंदर के अनुभव नहीं खुलते और हम अपने आपको पहचानने के योग्य नहीं हो सकते। हमें पता ही नहीं चल सकता कि आत्मा किस तत्व की बनी हुई है।

इस संसार के दो भाग जल और थल हैं। हर दाने और पौधे में जीव है। हिन्दु दर्शन ने इस सत्य को प्राचीन काल से मान रखा है। डा. बोस ने इस सत्य को दुनिया के सामने प्रयोग द्वारा साबित करके दिखाया है कि पौधे अनुभव करते हैं, श्वास लेते हैं और उनके अंदर भी आत्मा है। अगर किसी अंधेरे कमरे में रोशनी की एक किरण प्रवेश करे तो हम देखते हैं कि बेशुमार कीटाणु इस किरण में तैर रहे हैं और हमें सारा कमरा कीटाणुओं से भरा हुआ मालूम पड़ता है।

जब हम श्वास लेते हैं तो ये छोटे–छोटे जीव हमारे अंदर जाते हैं और मर जाते हैं। जब हम चलते हैं तो असंख्य जीव हमारे शरीर से टकराकर मर जाते हैं और बेशुमार जीव हमारे पाँव के नीचे कुचले जाते हैं। जब हम पानी पीते हैं तब भी यही हाल है। हम दुरबीन से देख सकते हैं कि पानी के गिलास में बेशुमार छोटे–छोटे जीव हैं। दुनिया का सारा वायुमंडल जीवों से खचाखच भरा हुआ मालूम पड़ता है। हम सुई की नोक धरती पर रखें तो इसके नीचे भी बेशुमार कीटाणु होंगे।

इस दुनिया में सर्वत्र जीव, जीव का विनाश कर रहा है। ऐसी दुनिया में जहाँ एक जीव दूसरे जीव का विनाश कर रहा है वहाँ न्याय और मानसिक शान्ति की आशा रखना असंभव है। कहीं पर भी शान्ति और सुरक्षा नहीं इसलिए जब प्राचीन महात्माओं ने पाया कि इस दुनिया में एक जीव दूसरे जीव का विनाश कर रहा है तो उन्होंने निश्चय किया कि इस दुनिया को छोड़ देना ही ज्यादा ठीक है।

उन महात्माओं ने अनुभव किया कि इस दुनिया और इसकी किसी वस्तु से मन को शान्ति नहीं मिल सकती, शान्ति मनुष्य के अंदर है। उस रूहानी समुंद्र में आत्मा एक बूँद है। उन्होंने सोचा कि वे जब तक इस संसार की कैद में हैं तब तक वे ऐसा रास्ता अपनाएं जो सबसे कम हानिकारक हो अर्थात वे ऐसी खुराक लें जिसके खाने से कम से कम पाप लगता हो।

उन महात्माओं ने देखा कि संसार के सारे जीवों को तत्वों के अनुसार पाँच श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। ये तत्व पाँच प्रकार के होते हैं।

पहली श्रेणी–जिनमें पाँच तत्व पूर्ण हैं यानि इंसान।

दूसरी श्रेणी–जिनमें चार तत्व मौजूद हैं और एक गुप्त है यानि चौपाया जानवर, इनमें सोचने–समझने की शक्ति नहीं होती क्योंकि इनमें आकाश तत्व गुप्त है।

तीसरी श्रेणी–उन जीवों की है जिनमें तीन ही तत्व क्रियाशील हैं जैसे हवा, पानी और अग्नि इसमें सब प्रकार के पक्षी आते हैं। इनमें आकाश और पृथ्वी तत्व नहीं के बराबर है।

चौथी श्रेणी–रेंगने वाले जीवों की है जिनमें केवल दो ही तत्व पृथ्वी और अग्नि मौजूद हैं।

पाँचवी श्रेणी–साग, सब्जियों और पेड़–पौधों की है जिसमें सिर्फ पानी का ही तत्व है। विशेषज्ञों ने साबित किया है कि कई साग–सब्जियों में 15 प्रतिशत पानी का भाग रहता है।

जब पहली चार श्रेणी के जीवों को मारा जाता है तो वे जीव पीड़ा के कारण चिल्लाते हैं। पेड़–पौधों की यह हालत नहीं हालाँकि उनमें भी जीवन है। इसलिए महात्माओं ने निश्चय किया कि साग–सब्जी का भोजन करने से कम पाप लगेगा, कर्मों का भार कम उठाना पड़ेगा। साग–सब्जी के भोजन से भी कर्मों का बोझ उठाना पड़ता है लेकिन यह बहुत हल्का होता है इसे हम भजन द्वारा बड़ी आसानी से दूर कर सकते हैं। महात्माओं ने साग–सब्जी के भोजन को उचित ठहराया है और अन्य जीवों की हत्या से परहेज करने के लिए कहा है।

इस जेल से निकलने का एकमात्र साधन 'शब्द–धुन' का अभ्यास है। यह साधन कुदरती है यह साधन इंसान का बनाया हुआ नहीं, यह उतना ही प्राचीन है जितना कि सृष्टि की शुरूआत। परमात्मा एक है उससे मिलने का रास्ता भी एक है और वह हर इंसान के अंदर है। इसको न हम बदल सकते हैं, न बढ़ा सकते हैं न तब्दील कर सकते हैं और न ही सुधार सकते हैं।

हम 'शब्द–धुन' पर सवार होकर ही अपने निज घर पहुँच सकते हैं। इसमें जाति, कौम, मजहब, देश या स्त्री–पुरुष का कोई सवाल नहीं; यह अपनी भीतरी शक्ति को जागृत करने का अभ्यास है। धीरे–धीरे हमारी आत्मा शरीर रूपी कब्र से बाहर निकलेगी और इसे छोड़ देगी। शरीर के नौं द्वार हैं, जिनके द्वारा आत्मा संसार से संपर्क रखती है। आत्मा इन द्वारों को बंद करके अपने ध्यान को तीसरे तिल में स्थिर करना सीखती है, तब आत्मा उच्च मंडलों की सैर शुरू करती है। जब आत्मा तुरिया पद में पहुँच जाती है तब मन, इन्द्रिय, काम, क्रोध, लोभ और अहंकार सभी वश में आ जाते हैं।

अभी आत्मा मन के अधीन है और मन इन्द्रियों के अधीन है। जब हम जड़ संसार को छोड़कर सूक्ष्म संसार में जाएंगे तब मन आत्मा के वश

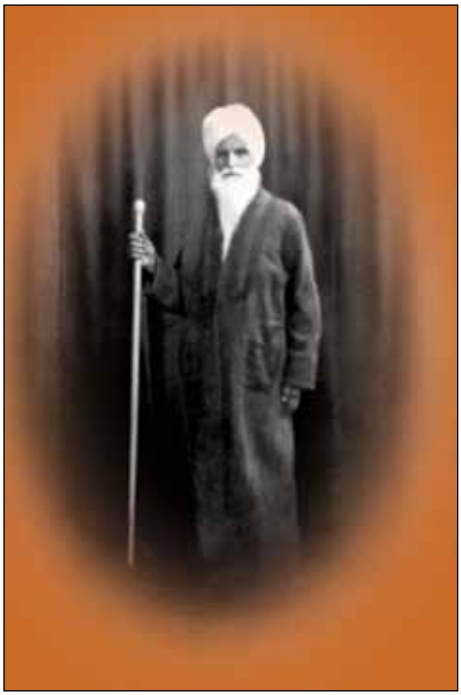

में आ जाएगा। जब हम सूक्ष्म मंडल को पार करके आगे बढ़ जाते हैं तो स्वर्ग और नर्क पीछे रह जाते हैं, आत्मा कारण मंडल में पहुँचकर इन स्वर्गों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती।

ब्रह्म, पारब्रह्म के नीचे है। ब्रह्म को छोड़कर जब आत्मा पारब्रह्म में पहुँचती है तब यह सब बंधनों से आजाद हो जाती है। पारब्रह्म में पहुँचकर मन और माया के सभी स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतर जाते हैं तब आत्मा अपने निर्मल रूप में निखर आती है इसे ही अपने आपको पहचानना कहते हैं। यहाँ पर न कोई आकार है न कोई शरीर है न कोई रूप, जवानी या बुढ़ापा है। यहाँ केवल अपने विशुद्ध प्रकाश में चमकती हुई आत्मा है जो उस परम ज्ञान और आनन्द की एक बूँद है। अब यह आत्मा रूहानियत के महान सागर को पहचानने के काबिल बन गई है। अब यह बूँद उस सागर में विलीन होने की कोशिश करती है।

गुरु शरीर नहीं, गुरु वह शक्ति है जो हमारे आंतरिक, रूहानी सफर में हर मंडल में हमारी रहनुमाई और सहायता करता है। जब तक हम स्थूल शरीर में हैं तब तक गुरु स्थूल शरीर द्वारा उपदेश करता है और जैसे–जैसे हम ऊपर के मंडलों में बढ़ते जाएंगे वैसे–वैसे उसका रूप भी प्रत्येक मंडल के अनुसार बदलता जाएगा। गुरु सच्चखंड तक हमें अपने साथ ले जाएगा।

***

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *माता मिली कैसी हैं और वे इस समय कहाँ हैं, क्या हम उनसे मिल सकेंगे?*

बाबा जी: मैं परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें अपना भेद बताया, आप हमें अंदर ले जाने के लिए, हमारी मदद करने के लिए हमेशा तैयार हैं। माता मिली ने अपने गुरुदेव की, मेरी और संगत की भी बहुत सेवा की है। अब माता मिली गुरु कृपाल के चरणों में हैं और उनके चरणों का रस ले रही है आप वहाँ जा सकते हैं आखिर सबने वहाँ जाना है। अगर आप ज्यादा समय भजन-सिमरन में लगाएं तो जीते जी ही देख सकते हैं कि माता मिली कहाँ है और हमारे लिए क्या सोच रही है?

प्यारेयो, सन्तमत करनी का मत है। कबीर साहब ने कहा है कि इधर से सब जाते हैं लेकिन उधर से कोई आकर हमें कुछ नहीं बताता। उधर से केवल सतगुरु आता है जो हमें समझाता है कि इस दुनिया का जो सामान एक बार हमारे हाथ से निकल जाता है वह फिर हमें कभी प्राप्त नहीं होता। हमारा जो साथी साथ छोड़ गया है वह उस शरीर में कभी हमारे पास नहीं आएगा। सन्त समझाते हैं कि अंदर सतगुरु के साथ प्यार करें, बाहर देह से प्यार न करें। 'शब्द' के साथ जुड़ें, देह के साथ न बंधें।

एक प्रेमी: *महाराज जी, शारीरिक चोला छोड़ने के बाद रूहानियत में तरक्की करने में ज्यादा समय क्यों लगता है?*

बाबा जी: आप लोगों को पता नहीं कि अंदर के मंडलों में ज्यादा समय लगता है या नहीं। यह हमारे प्यार पर निर्भर करता है। कई बार हम संसार मंडल में किसी वजह से अभ्यास नहीं कर सकते लेकिन हमारे

अंदर सच्ची तड़प और सच्ची विरह होती है ऐसी आत्माओं को अंदर भी देर नहीं लगती क्योंकि अंदर सांसारिक बंधन नहीं होते। यह कोई सरकारी या मिल्ट्री की सर्विस नहीं कि इसमें लिहाज रखा जाता है यह हमारे प्यार और तड़प पर निर्भर करता है। प्रेमी का अपने गुरु के पास जाना इस तरह होता है जिस तरह खुष्क बारूद को अग्नि के नजदीक कर दें।

यह निश्चित नहीं कि हम इतने समय में एक मंडल पार करेंगे या इतने समय में दूसरा मंडल पार करेंगे। 'सुरत–शब्द' का हवाई जहाज बहुत तेज चलता है। यह हमारी तड़प पर निर्भर करता है कि हम इसे कितना तेज चला सकते हैं। हमारी जितनी तड़प होगी गुरु हमें उतनी ही जल्दी इस जहाज पर बिठाकर 'शब्द–नाम' के बेड़े में ले जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गोली की आवाज तो बाद में आती है, वह लग पहले जाती है।'' इसी तरह हम जैसे–जैसे अभ्यास में तरक्की करते रहते हैं सुरत की चढ़ाई होती रहती है। यह हमारे सोचने पर निर्भर करता है कि कितना समय लगता है?''

मैं आपको वह कहानी सुनाता हूँ जिसे महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी अपने सतसंगों में सुनाया करते थे। गुरु गोबिंद सिंह जी के समय में ऐसे भी नामलेवा थे जिन्हें गुरु नानकदेव जी या गुरु अंगददेव जी से नाम मिला था लेकिन वे लापरवाही और आलस्य के कारण महान गुरुओं के पास रहकर भी 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं कर सके।

उस समय एक प्रेमी आत्मा भाई बेला गुरु गोबिंद सिंह जी के पास आया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उससे पूछा, ''हाँ भई, तू कितना पढ़ा–लिखा है और क्या कारोबार कर सकता है?'' भाई बेला ने कहा, ''मैं पढ़ा–लिखा तो नहीं मैं एक जमींदार हूँ, घोड़ो की सेवा दिल लगाकर कर सकता हूँ, मैं आपके घोड़े बड़ी जल्दी तैयार कर दूँगा।'' गुरु साहब ने

कहा, ''हमें बहुत खुशी है। हमें ऐसे ही आदमी की जरूरत है तू रोज एक तुक्क ले लिया कर और साथ–साथ घोड़ो की सेवा भी किया कर।

वह प्रेमी आत्मा रोज गुरु साहब से एक तुक्क ले लिया करता था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने जिंदगी में जुल्म की खातिर काफी संघर्ष किया, जालिमों से काफी लड़ाईयाँ लड़ी। एक दिन आप बाहर किसी मुकाबले पर जा रहे थे तो भाई बेला ने सोचा कि कहीं गुरु साहब जल्दी में चले न जाए! उसने गुरु साहब के पास आकर कहा, ''महाराज जी, मुझे मेरी तुक्क दे जाएं।'' आप सोचकर देखें, अगर कोई आदमी दुश्मन से लड़ने के लिए जा रहा हो वह समय पढ़–पढ़ाई का नहीं होता। गुरु साहब उसके दृढ़ विश्वास पर बहुत खुश हुए कि इसे अपनी तुक्क की चिन्ता है। आपने कहा:

वाह! भाई बेला न पछाणे वक्त न पछाणे वेला

भाई बेला ने उसी को हुक्म और परमात्मा के मुँह से निकली हुई बाणी समझ लिया, वह सारा दिन उसी को रटता रहा। गुरु साहब के पास जो पुराने सतसंगी रहते थे उनमें से कुछ पढ़े–लिखे भी थे। वे सारा दिन भाई बेला का मजाक उड़ाते रहे कि गुरु साहब तो अपना पीछा छुड़वाने के लिए इसे यह कहकर गए थे और यह उसी को रट रहा है। जब गुरु साहब वापिस आए तो उन सतसंगियों ने गुरु साहब को बताया कि आप तो यह कहकर गए थे, ''वाह! भाई बेला न पछाणे वक्त न पछाणे वेला।'' यह सारा दिन इसी तुक्क को रटता रहा है।

आप जानते हैं कि होछे आदमी जल्दी ही एक–दूसरे की शिकायत करते हैं। गुरु साहब ने भाई बेला को अपने पास बुलाया और उसकी आँखों में आँखे डालकर उसकी सुरत को ऊपर ले गए और कहा, ''हाँ भई, जिन्होंने वेला वक्त नहीं पछाना उन्होंने ही परमात्मा को पाया है।'' भाई बेला चौबिस घंटे प्रेम भरी बातें करने लगा कि गुरु क्या है, ऊपर के मंडलों में आत्मा के लिए क्या करता है? जब वह यह सब बताने लगा तो

जो लोग महाराज जी के पास इतने सालों से रह रहे थे उन्होंने अपनी कमी की तरफ तो ध्यान नहीं दिया बल्कि गुरु साहब के ऊपर अभाव ले आए।

पुराने सतसंगियों ने गुरु साहब से शिकायत की कि इस दरबार में इंसाफ नहीं है। किसी ने कहा कि मुझे पचास साल हो गए हैं, किसी ने कहा कि मुझे तीस साल हो गए हैं और किसी ने कहा कि मैंने गुरु नानकदेव जी से नाम लिया है फिर हमारे साथ यह बेइंसाफी क्यों? भाई बेला कल आया और इसकी सुरत अंदर के मंडलों का रस लेने लगी है।

गुरु साहब ने कहा, ''हाँ भई, तुम्हें इसका जवाब देते हैं, आपने भांग मंगवाई और उन प्रेमियों से कहा कि इसे अच्छी तरह रगड़ो क्योंकि अच्छी तरह रगड़ने से ज्यादा नशा आएगा। आपने कुछ प्रेमियों से कहा कि इसे पी लें और कुछ प्रेमियों से कहा कि जो इसे गले से नीचे उतारेंगे उन्हें सिक्खी से खारिज कर दिया जाएगा फिर गुरु साहब ने पहले वाले प्रेमियों से पूछा, ''क्यों भई, नशा आया?'' उन प्रेमियों ने कहा कि हमें दुनिया रंग–बिरंगी नजर आ रही है, दुनिया की होश भूली हुई है। फिर आपने दूसरे प्रेमियों से पूछा तो उन्होंने कहा अगर पीते तो ही नशा आता। गुरु साहब ने कहा कि यही आपके सवाल का जवाब है।

आप सतसंग सुनते हैं बानी पढ़ते हैं, एक कान से सुनते हैं और दूसरे कान से निकाल देते हैं उस पर अमल नहीं करते। आपके अंदर प्यार तो है लेकिन जब आपका मन आपके ऊपर हमला करता है आपको इन्द्रियों के भोगों में फँसाता है, खट्टे–मीठे रसों में लगाता है उस समय आप इस जानी दुश्मन के आगे हार मान लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐबी आदमी कभी खुद ही अपने ऐब बयान कर देता है।''

जब हम अभ्यास करने बैठते हैं उस समय मन हमारे अंदर जल्दबाजी पैदा करता है कि तुझे अभ्यास करते हुए इतने दिन हो गए हैं लेकिन अभी तक तेरा पर्दा नहीं खुला। हम यह नहीं सोचते कि हम इतने सालों से मन

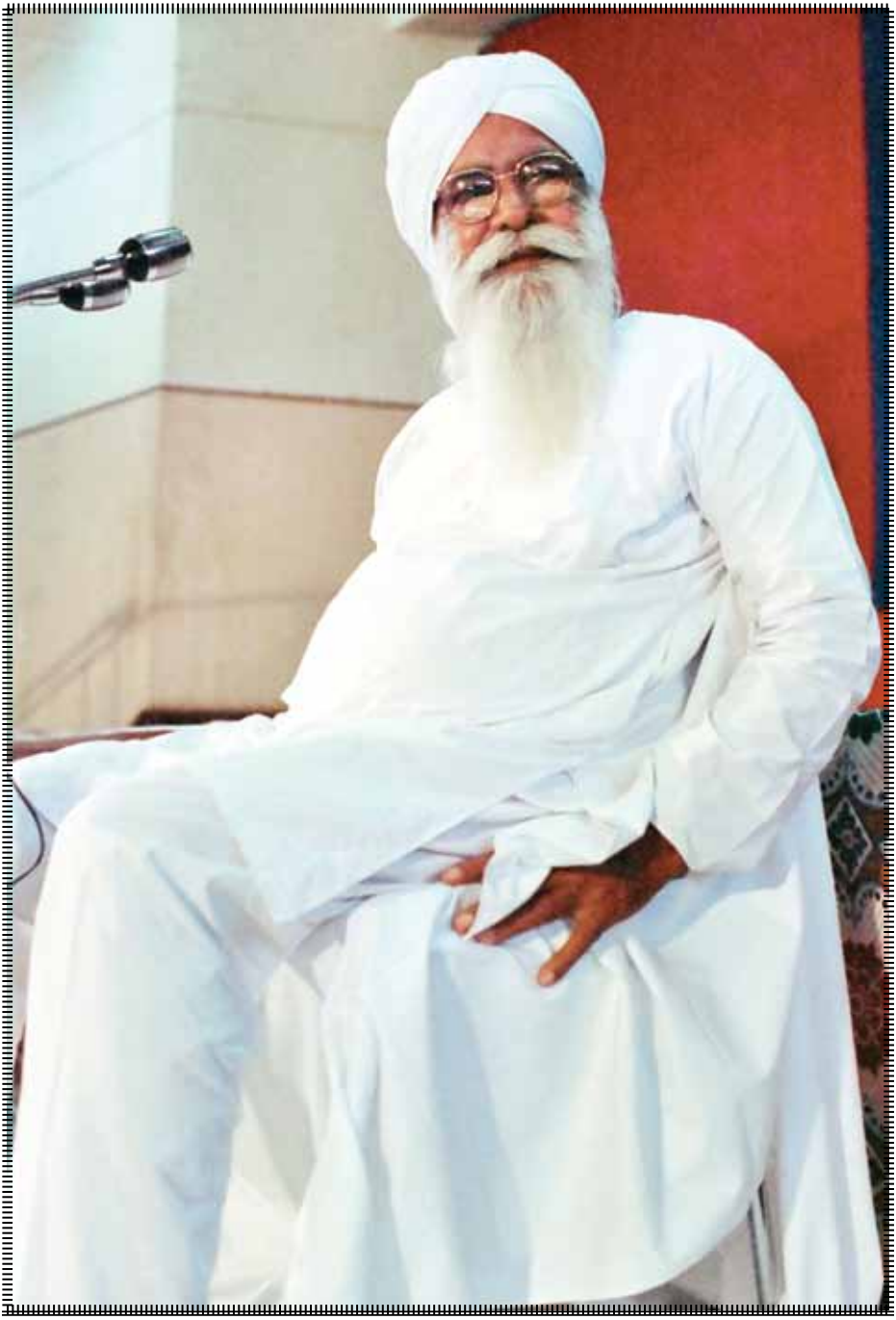

के गुलाम बने हुए हैं, हमारे अंदर कितनी कमजोरियाँ हैं? हमने कितना गुरु का कहना माना और कितना मन का कहना माना।

गुरु तो चाहता है कि मेरे जीवन काल में ही मेरे शिष्यों की सुरत ऊपर के मंडलों को पार करे। जिस तरह एक पायलट हवाई जहाज को समय पर उड़ाकर ले जाता है इसी तरह गुरु चाहता है कि मेरे शिष्य अपने जीवन काल में ही भरपूर हो जाएं और अपना कारोबार ठीक कर लें। सन्त–सतगुरु अभ्यास की प्रैक्टिस करवाकर हमारे जीवन को पवित्र करने पर जोर देते हैं। हमारी आत्मा ने जहाँ से क्रॉस करना है वह दुनिया इससे भी खूबसूरत है अगर हम यहाँ पर कायम नहीं विषय–विकारों में लिपटे हुए हैं तो हम कैसे आगे जाएंगे?

महाराज सावन सिंह जी सतसंगों में जिक्र किया करते थे कि एक बार आपने पहाड़ी इलाके में नामदान का कार्यक्रम रखा। उस कार्यक्रम में कई प्रेमियों की सुरत चढ़ी और कईयों को अच्छे तजुर्बे भी हुए।

मैं पिछले साल जुलाई में बैंगलोर गया था, वहाँ नामदान के लिए तकरीबन 125 प्रेमी बैठे। उनमें से कोई ऐसा नहीं था जिसने यह इकबाल न किया हो कि मुझे प्रकाश नजर नहीं आया या आवाज सुनाई नहीं दी। जब मुम्बई में नामदान हुआ तो एक–दो प्रेमियों को ही अनुभव हुआ बाकी सब खामोश रहे, उन्हें दोबारा से बैठक देनी पड़ी।

प्यारेयो, गुरु वही, नाम वही और थ्योरी समझाने वाले भी वही, अब आप ही फैसला कर सकते हैं कि बैंगलोर में जैसा अनुभव हुआ वैसा अनुभव मुम्बई में क्यों नहीं हुआ? यह हमारे प्यार और तड़प पर निर्भर होता है या हमारे कर्मों पर निर्भर होता है कि हमारी आत्मा पर कितना बोझ है, उस पर कितने बुरे कर्मों की मैल चढ़ी हुई है।

मैंने अपनी जिंदगी में दो बार अभ्यास करवाया है। एक बार का अभ्यास तो बहुत कठिन था। जिस तरह सिक्ख लोग अखंड पाठ रखते हैं

पहला आदमी पाठ पढ़ रहा होता है जब तक दूसरा आदमी उसके साथ पढ़ना न शुरु कर दे पहले वाला पाठ छोड़ नहीं सकता। इसी तरह दूसरी बार के अभ्यास में हमने सारी संगत के तीन भाग कर लिए एक भाग की बैठक चार घंटो की होती थी। उसके बाद दूसरा भाग फिर तीसरा भाग बैठता था। इस तरह चार घंटे बाद बारी आ जाती थी। एक आदमी पहरा देता था अगर कोई आलस्य या नींद में सिर नीचे करता तो उसे थप्पड़ पड़ता था, मैं उनके बीच ही बैठता था।

उस प्रोग्राम में मैंने देखा कि गाँव की भोली–भाली संगत को ज्यादा तजुर्बे हुए, उन्होंने ज्यादा तरक्की की। शहरी संगत यही कहती कि बैठा नहीं जाता, उनके पल्ले यही कुछ था। इस महीने की 1 से 16 तारीख तक के प्रोग्राम में काफी प्रेमी शामिल हुए यह प्रोग्राम भी काफी कामयाब रहा।

हमने एक दिन सुबह प्रशाद में खीर बनाई और शाम को प्रशाद में हलवा बना लिया। एक प्रेमी ने मेरे पास आकर कहा कि प्रशाद से मुझे गर्मी हो गई और खीर से वाई हो गई। मैंने उससे कहा, ''अगर मैं कुछ नहीं करता तो अंदर से महाराज जी नाराज होते हैं कि तू संगत की सेवा नहीं करता। मुझे अफसोस है कि संगत खीर और प्रशाद पर भी नाराज है। सोचकर देखें! ऐसे लोग कैसे तरक्की करेंगे?''

कबीर साहब कहते हैं, ''साधु की संगत में चाहे हमें खुष्क रोटी मिले तो हम यही समझें कि हमारे कर्मों में ऐसा ही लिखा है और यह बहुत उत्तम प्रशाद है।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग ज्यादा पढ़–लिख जाते हैं उन लोगों का दिमाग ज्यादा घूमने लग जाता है वे यही सोचते हैं कि इस किताब में यह लिखा है और उस किताब में वह लिखा है, वे अभ्यास के चोर बन जाते हैं।''

एक बार कबीर साहब के पास तीन आदमी आए। एक पढ़ा–लिखा दूसरा अनपढ़ और तीसरा योगी था। उन तीनों ने अपने–अपने सवाल

किए और कबीर साहब ने उन्हें बहुत प्यार से जवाब दिया। पढ़े–लिखे ने कहा, ''अनपढ़ की भी कोई जिंदगी है वह तो जानवर की तरह होता है।'' अनपढ़ ने कहा, ''पढ़ने से इंसान का दिल काली स्याही हो जाता है कभी कोई किताब नहीं पढ़नी चाहिए।'' योगी ने कहा, ''योग करना चाहिए आसन करने चाहिए।'' कबीर साहब ने उन्हें बड़े प्यार से जवाब दियाः

मैं जाणयां पढ़बो भला, पढ़बो से भल योग
भक्त न निन्दों राम की, ते भावे निन्दों लोग

आप कहते हैं कि मैंने सोचा था शायद! पढ़ा–लिखा अच्छा होगा लेकिन यह तो अनपढ़ की निन्दा कर रहा है। अनपढ़, पढ़े–लिखे की निन्दा कर रहा है और योगी सबकी ही निन्दा करने में लगा हुआ है। हमें कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए बेशक लोग हमारी निन्दा करें लेकिन हमें दिन–रात गुरु भक्ति में लगे रहना चाहिए। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि कौन सा मंडल कब पार होगा।

महाराज सावन सिंह जी पढ़े–लिखों की एक हँसी वाली बात बताया करते थे कि बनियों का एक पढ़ा–लिखा परिवार कहीं बाहर जा रहा था। उस समय आज की तरह नदियों पर पुल नहीं थे, बसें और ट्रेनें भी नहीं थी। रास्ते में एक नदी आई, उस नदी को पार करने के लिए एक घाट बना हुआ था। उनमें से एक पढ़ा–लिखा आगे गया उसने नापा कि नदी में बीस फुट गहरा पानी है और हम भी बीस आदमी हैं। उसने हिसाब लगाया कि सबके हिस्से में एक–एक फुट पानी आएगा, जो भी पानी में जाता वह डूब जाता। उस पढ़े–लिखे ने सोचा कि मेरा हिसाब तो ठीक है फिर हम डूब क्यों रहे हैं?

वहाँ एक तर्जुबकार आदमी ने उस पढ़े–लिखे आदमी से कहा कि तू परिवार के लोगों को पानी में क्यों डुबोता जा रहा है? पानी की गहराई तो बीस फुट ही रहेगी अगर तुम लोगों को पार होना है तो किसी नाव का सहारा लो। हमें भी नाम की कमाई करके अनुभव प्राप्त करना चाहिए।

प्यारेयो, आपका सवाल बहुत अच्छा और दिलचस्प था, इस पर और भी बहुत कुछ बोला जा सकता है। मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मैं अपने गुरुदेव का हुक्म मान सका। जानी दुश्मन मन अंदर ही बैठा है इसने अनेकों को ही डुबो दिया है। मैं इस मत में कुछ करने के लिए ही दाखिल हुआ था। शुरु–शुरु में जब पश्चिमी प्रेमी मेरे पास आए तो उन्होंने मेरे आगे यही समस्या रखी कि हमारे गिट्टे, घुटने दुखते हैं हमारा ख्याल नहीं टिकता। मैं यही सोचता कि जब इन्हें गुरु मिला है तो ये ऐसा क्यों कहते हैं? गिट्टे–घुटने दुःखते हैं तो दुःखने दें, ये अभ्यास क्यों छोड़ते हैं?

एक बार दयालु कृपाल करणपुर आए। एक आदमी ने महाराज जी से कहा, ''मुझे पहले ज्योत दिखाई देती थी अब दिखाई नहीं देती।'' महाराज जी ने उसे अभ्यास में बिठाया लेकिन उसे फिर भी अनुभव न हुआ। मैं वहाँ पास ही खड़ा था मेरे दिमाग पर बहुत असर हुआ कि यह आदमी समय क्यों खराब कर रहा है, गुरु को माथा क्यों नहीं टेकता क्या ज्योत गुरु से अलग है? गुरु ज्योत स्वरूप है। वह प्रेमी अभी भी सतसंग में आता है और उस समय को अभी भी याद करता है कि मैंने कितनी बड़ी गलती की, भगवान तो मेरी आँखों के सामने था और मैं अंदर ही कोशिश करता रहा।

एक प्रेमी: *महाराज जी, आप हमें बताएं कि सच्चखंड में हम किस तरह एक–दूसरे की मदद कर सकते हैं?*

बाबा जी: प्यारेयो, किसी की मदद करना बुरा नहीं लेकिन पहले अपने दिल में झाँककर देखें क्या हमने रूहानियत में इतनी तरक्की कर ली है कि हम किसी की मदद कर सकें? हम किसी की क्या मदद करेंगे हम तो अपनी ही मदद नहीं कर सकते।

सभी सन्तों ने बताया है कि सच्चखंड शान्ति का देश है। वहाँ मौत–पैदाइश नहीं, किसी आत्मा को कोई रोग नहीं और वहाँ किसी को किसी की मदद की जरूरत नहीं। वहाँ पहुँची हुई आत्माएं परमात्मा से बात

करती हैं, परमात्मा में मगन हैं। उन्हें परमात्मा से अमृत मिलता है वे तृप्त होती हैं, सच्चखंड में केवल परमात्मा ही परमात्मा है।

प्यारेयो, डाक्टर की जरूरत वहाँ होती है जहाँ ज्यादा रोगी हों। जहाँ कोई रोगी ही न हो वहाँ डाक्टर की क्या जरूरत है? हमने भक्ति करके रूहानियत के देश में किसी की मदद के लिए नहीं जाना, वहाँ किसी को किसी की मदद की जरूरत नहीं। वह परमात्मा का देश है वहाँ परमात्मा ही परमात्मा है। आत्मा परमात्मा रूप होकर ही वहाँ पहुँचती है, आत्मा 'शब्द' के अंदर जज्ब हो जाती है जैसे पानी का कतरा पानी में मिल जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल जोत समाना

मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ जिससे आपको यह बात समझने में मदद मिलेगी। एक बादशाह ने एक दिन अपनी प्रजा से कहा कि जिसे पैसा, कपड़ा और जरूरत का जो सामान चाहिए वह आकर ले सकता है। बादशाह ने सारा दिन खुले हाथों से खूब माल लुटाया। शाम के समय एक भंगी ने बादशाह से आकर कहा, ''मुझे तो अभी पता चला है कि आप बहुत माल बाँट रहे हैं, मुझे भी कुछ दें।''

बादशाह ने सोचा कि यह बहुत मेहनत करके आया है, बहुत नम्रता दिखा रहा है इसे कुछ देना चाहिए। बादशाह ने उसे एक सोने का थाल दे दिया जिसमें पाँच लाल जड़े हुए थे और एक बहुत ही अमोलक हीरा भी जड़ा हुआ था। भंगी उस थाल को पाकर बहुत खुश हुआ, उसने घर जाकर वह थाल भंगन को दे दिया जिसे थाल की अहमियत का ज्ञान नहीं था। भंगन बाजार से चार आने का टोकरा खरीदकर लाती थी जिसमें लोगो की मैल डालकर फैंकती थी और वह टोकरा दूसरे दिन ही टूट जाता था। भंगन इस थाल को पाकर खुश हुई कि यह मजबूत बर्तन है, मैं इसमें लोगों की मैल डालकर बाहर फैंक आया करूंगी।

दूसरे दिन जब भंगन ने सोने के थाल में मैल डाला तो वह थाल काला हो गया, उसमें लगे हुए लाल बुझ गए और हीरे का रंग भी फीका पड़ गया। आवाज आई कि तूने बहुत बुरा किया है लेकिन उस आवाज को कौन सुनता है?

यह तो आपको समझाने के लिए कहानी है, सच्चाई यह है कि वह बादशाह कुलमालिक परमात्मा है। परमात्मा ने सन्तों को कमीशन दिया होता है। जब हम सब योनियों में घूम–घूम कर थक जाते हैं तो किसी योनि में ऐसा काम हो जाता है जैसा कि सन्त किसी पेड़ का फल खा लें! किसी जानवर पर सवारी कर लें! कोई कीड़ा बनकर उनसे टकराकर मर जाए तो उसे इंसान का जामा मिलता है।

परमात्मा ने खुश होकर इंसान का जामा दे दिया, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियां लाल हैं। बुद्धि चमकता हुआ हीरा है लेकिन इंसान ने इंसानी जामा जो सोने का थाल है उसकी कद्र नहीं की। इस जामें में बैठकर विषय भोगे, मीट–शराब खाया तो पाँचों लाल बुझ गए और बुद्धि हीरा भी मैला हो गया। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए

हंस ने हीरे–मोती चुगने थे लेकिन गंद में चोंच फँसाकर बैठ गया है। इंसान ने नाम जपकर इंसानी जामा सफल करना था, अमृत पीना था लेकिन इसने विषय–विकार भोगकर हीरे जैसे जन्म को बर्बाद कर लिया।

एक प्रेमी: *जो लोग यहाँ बैठे हैं क्या वे पिछले जन्मों में कभी मिले थे? अगर हमें पिछले जन्मों के बारे में पता लग जाए तो क्या हमारी रूहानी तरक्की में फायदा होगा? सतगुरु की भक्ति और मजहबी पागलपन में क्या फर्क है? हम सतगुरु के प्रति अपनी श्रद्धा किस तरह बढ़ा सकते हैं?*

बाबा जी: सन्त ऐसी भविष्यवाणियाँ नहीं किया करते, किसी को यह नहीं बताते कि तूने पहले यह पुण्य किया था या पाप किया था। तू पहले

हाथी–घोड़ा, मर्द या औरत था। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिन लोगों के साथ हमारा पिछला संबध होता है वही लोग फिर इकट्ठे होते हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा है, ''उड़ने वाले को उड़ने वाला मिल जाता है।''

आपने अनुराग सागर में भी पढ़ा है कि काल ने एक टाँग पर खड़े होकर सत्तर युग बड़ी भारी तपस्या की, मालिक ने खुश होकर उसे रूहें सौंप दी। काल आत्मा को न खत्म कर सकता है और न ही बना सकता है। काल की यही कोशिश होती है कि आत्मा को कर्मों के जाल में फँसाए रखे। दयाल ताकत ने सन्तों के आने के लिए रास्ता रखा है कि हमारी ताकत भी संसार में आया करेगी तूने उस ताकत को इंसान का जामा जरूर देना है।

काल ने कहा कि सन्त आ सकते हैं लेकिन मेरी कुछ शर्तें हैं जिन्हें निभाना बहुत जरूरी है। पहली शर्त–मैं जिस आत्मा को जहाँ जन्म दूँ चाहे उसका शरीर कुबड़ा करूं, चाहे सीधा करूं, चाहे पशु–पक्षी कुछ भी बनाऊँ वह आत्मा उसी योनि में खुश रहे और उसे वही योनि प्यारी लगे।

दूसरी शर्त–किसी आत्मा को पिछले जन्म का ज्ञान न हो कि मैं पिछले जन्म में क्या था? अगर हमें यह पता लग जाए कि हम सुख इस कर्म का भोग रहे हैं और दुःख इस कर्म का भोग रहे हैं तो हम कभी भी बुराई न करें, अच्छे कर्म ही करें। अगर काल ने वर न लिए होते तो सन्तों के लिए इस संसार से आत्माओं को ले जाने का काम बहुत आसान हो जाता।

सूअर की योनि सबसे मुश्किल है, वह गंद खाता है और गंद में ही सोता है अगर कोई उसे मारे तो वह चिल्लाता है भागकर बचने की पूरी कोशिश करता है। वह इतनी बुरी योनि को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं।

एक मालिक के प्यारे के लिए किसी अंधे को आँख दे देना, लंगड़े को टाँग दे देना कोई मुश्किल काम नहीं अगर सन्त एक जिले में किसी को

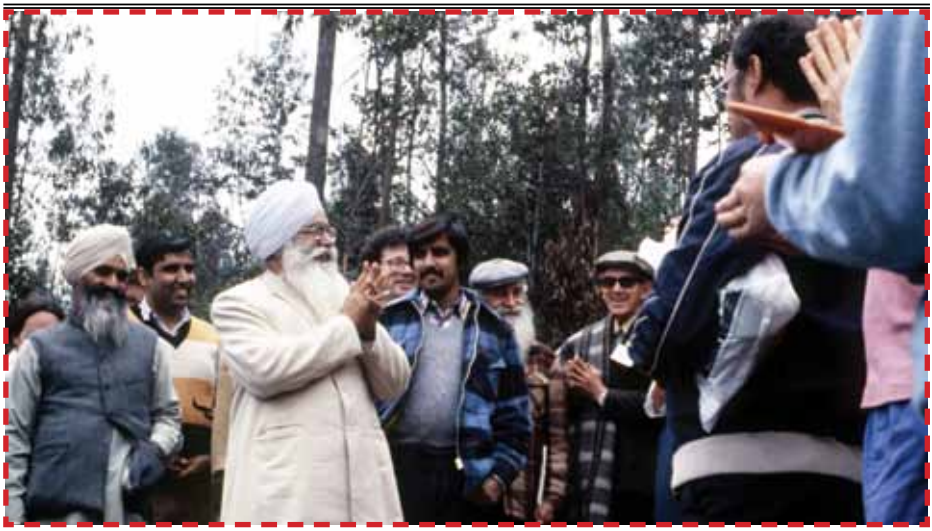

आँख दे दें और दूसरे जिले में किसी को टाँग दे दें तो सारा जिला ही नाम लेने के लिए तैयार हो जाएगा। हम सब लोग गर्ज के बंधे होते हैं लेकिन सन्त संसार में आकर ऐसे करिश्में नहीं दिखाते। सन्त कुदरत के नियमों के अनुसार जीते हैं और अपने सेवकों को भी हिदायत देते हैं कि अपने अंदर से नाम की पूँजी का धुआँ तक न निकलने दें।

सतगुरु भक्ति करने से हमारे अंदर प्यार पैदा होता है और हम हर एक के अंदर परमात्मा को बैठा हुआ देखते हैं। हम किसी पर कीचड़ फैंकने की बजाय अपने अवगुण देखते हैं, लोगों की नहीं अपनी परख करते हैं। परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि तू हमारे ऊपर मेहर कर, हमारी परख नहीं करना, हमारे ऊपर अपनी दया बनाए रखना।

आज जो भी लड़ाई–झगड़े हो रहे है यह सब मजहबी पागलपन है। आज हम ईराक और ईरान में देख रहे हैं वे सभी मौहम्मद साहब और कुरान को मानने वाले हैं जबकि एक तरफ शिया और दूसरी तरफ सुन्नी हैं। सुन्नी कहते हैं, ''हम अच्छे हैं हमने शियाओं पर जीत प्राप्त करनी है।'' शिया कहते हैं, ''हम अच्छे हैं हमने सुन्नियों पर जीत प्राप्त करनी है।''

***

RNI No. RAJHIN / 2003 / 9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज